

भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रचार में सोशल मीडिया: अवसर, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

राजश्री पुरसेठ

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

Corresponding author: rajshreepurseth@gmail.com

Available at <https://omniscientmjprujournal.com>

सारांश

भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत की आत्मा है — एक ऐसी विरासत जो सहस्राब्दियों से विज्ञान, दर्शन, चिकित्सा, कला और जीवनशैली को दिशा देती आई है। आज जब विश्व डिजिटल संवाद की ओर अग्रसर है, तब सोशल मीडिया एक ऐसा सेतु बन सकता है, जो इस प्राचीन ज्ञान को आधुनिक चेतना से जोड़ सके। YouTube, Instagram, X, Facebook और LinkedIn जैसे मंचों पर आयुर्वेद, योग, वास्तु, संगीत, और नैतिक दर्शन जैसे विषयों को संक्षिप्त वीडियो, इन्फोग्राफिक्स और पॉडकास्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। “एक मिनट में वेद” जैसे अभियान न केवल युवाओं को आकर्षित करेंगे, बल्कि उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य भी करेंगे। जनजातीय और ग्रामीण समुदायों के पारंपरिक अनुभवों को डिजिटल कहानियों के रूप में प्रस्तुत कर हम न केवल उनके ज्ञान को सम्मान दे सकते हैं, बल्कि उसे वैश्विक मंच पर भी पहुँचा सकते हैं। हैशटैग अभियानों जैसे #DigitalVedas, #IKSForSDG, और #BharatiyaGyanOnline के माध्यम से यह संवाद सीमाओं से परे जा सकता है। शैक्षणिक संस्थानों को चाहिए कि वे IKS आधारित डिजिटल प्रतियोगिताएँ, वेबिनार और सोशल मीडिया चैलेंज आयोजित करें, जिससे नवाचार और सहभागिता को प्रोत्साहन मिले। साथ ही, विशेषज्ञों को सोशल मीडिया पर प्रामाणिक प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत कर IKS को लोकप्रिय संस्कृति में स्थान दिलाया जा सकता है। इस प्रकार, सोशल मीडिया केवल एक प्रचार माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनः जीवंत करने का एक सांस्कृतिक आंदोलन बन सकता है — जो लोक से वैश्विक तक, जड़ से आधुनिक तक, और परंपरा से नवाचार तक की यात्रा को संभव बनाता है।

बीज शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, डिजिटल शिक्षा, लोक संस्कृति, ज्ञान का प्रसार, रणनीतियाँ।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का स्वरूप इतना विराट और गहन है कि उसके भीतर समाहित ज्ञान परंपरा एक अमूल्य निधि के समान है। यह केवल ग्रंथों के पन्नों तक सीमित नहीं, बल्कि ऋषि-मुनियों के तप, योगियों की साधना, वैज्ञानिकों की खोज और कवियों की वाणी से प्रवाहित होती रही है। यही भारतीय ज्ञान प्रणाली है, जो हजारों वर्षों से हमारी सभ्यता की धड़कन बनी हुई है। वेदों की ऋचाएँ इसका शाश्वत स्रोत हैं, जिनमें सृष्टि के रहस्य, जीवन के आदर्श और मानव कल्याण का मार्ग प्रकाशित होता है। उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा के अद्वैत का गूढ़ दर्शन मिलता है तो रामायण और महाभारत में आदर्श, नीति और धर्म का जीवन्त चित्रण। पुराणों ने इस ज्ञान को लोकभाषा और कथाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया। इस ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी समग्र दृष्टि — जहाँ विज्ञान और अध्यात्म, तर्क और अनुभूति, भौतिकता और आध्यात्मिकता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इसमें केवल जानने की जिज्ञासा नहीं, बल्कि

जीवन को जीने की कला निहित है। यही कारण है कि यह प्रणाली "सर्वं भवन्तु सुखिनः" के आदर्श को आत्मसात करती है और समूचे विश्व को एक परिवार—"वसुधैव कुटुम्बकम्"—के रूप में देखने की प्रेरणा देती है। आज के युग में, जब मानवता भौतिक प्रगति की अंधी दौड़ में थकान और अशांति का अनुभव कर रही है, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली एक प्रकाशस्तंभ की भाँति मार्गदर्शन करती है। यह हमें बताती है कि सच्चा ज्ञान वही है, जो मानवता को जोड़ने वाला, प्रकृति का संरक्षण करने वाला और आत्मा को ऊर्ध्वगामी बनाने वाला हो। संक्षेप में, भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल अतीत की गौरवशाली धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य का पथप्रदर्शक है—एक ऐसा पथ, जो हमें सत्य, सुंदर और शुभ की ओर ले जाता है।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म वे डिजिटल माध्यम हैं, जिनके माध्यम से लोग इंटरनेट पर एक-दूसरे से संवाद करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, सूचनाएँ साझा करते हैं और विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में सहभागिता करते हैं। यह केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि शिक्षा, व्यापार, मनोरंजन और सामाजिक जुड़ाव का भी महत्वपूर्ण साधन बन चुका है।

प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म –



चित्र 1. प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की विशेषताएँ

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ज्ञान, सूचना और संवाद को तीव्र गति से साझा करने का माध्यम है। यह शिक्षा, संस्कृति और व्यवसाय को जोड़ते हुए वैश्विक स्तर पर लोगों को जोड़ने का सशक्त साधन है।

1. संपर्क और संवाद को आसान और तेज़ बनाना: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह लोगों को भौगोलिक दूरी से परे जोड़ता है। चाहे कोई व्यक्ति देश के किसी भी कोने में हो या विदेश में, वह तुरंत संदेश, कॉल या वीडियो कॉल

के माध्यम से अपने मित्रों, परिवार और सहकर्मियों से जुड़ सकता है। पहले जहाँ संवाद पत्र या टेलीफोन पर निर्भर था, वहीं अब सोशल मीडिया ने संवाद को तत्काल और सुलभ बना दिया है।

2. **सूचना और समाचार का त्वरित आदान-प्रदान:** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आज के समय में सूचना और समाचार का सबसे तेज़ स्रोत बन चुके हैं। किसी घटना के घटित होते ही कुछ ही सेकंड में वह पूरे विश्व में वायरल हो जाती है। समाचार चैनलों और अखबारों की तुलना में सोशल मीडिया सूचना के प्रसार का अत्यधिक गतिशील और सशक्त माध्यम है। हालाँकि, इसकी चुनौती यह है कि सूचना की सत्यता कभी-कभी संदिग्ध भी होती है।
3. **शैक्षिक संसाधन और सीखने के अवसर उपलब्ध कराना:** आधुनिक शिक्षा में सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण होती जा रही है। यूट्यूब, टेलीग्राम, लिंक्डइन, गूगल क्लासरूम और अन्य प्लेटफॉर्म पर लाखों ई-लर्निंग संसाधन उपलब्ध हैं। छात्र-छात्राएँ इनसे नई चीज़ें सीख सकते हैं, प्रश्नों का समाधान पा सकते हैं और विशेषज्ञों से जुड़ सकते हैं। विशेषकर ऑनलाइन कोर्स, वेबिनार और ई-लाइब्रेरी ने शिक्षा को वैश्विक स्तर पर सुलभ बना दिया है।
4. **व्यापार और मार्केटिंग के लिए प्रभावी माध्यम:** आज लगभग हर छोटा-बड़ा व्यवसाय सोशल मीडिया से जुड़ा है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और लिंक्डइन जैसे प्लेटफॉर्म पर कंपनियाँ अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रचार करती हैं। इससे व्यापारियों को कम लागत में अधिक ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर मिलता है। डिजिटल मार्केटिंग, ऑनलाइन शॉपिंग और ब्रांड प्रमोशन सोशल मीडिया के माध्यम से बहुत सरल हो गए हैं।

5. **मनोरंजन और रचनात्मकता को प्रोत्साहन:** सोशल मीडिया केवल संवाद और शिक्षा का माध्यम नहीं, बल्कि मनोरंजन और रचनात्मकता का भी केंद्र है। इंस्टाग्राम रील्स, यूट्यूब वीडियो, फेसबुक पोस्ट, मीम्स और शॉर्ट वीडियो आज युवाओं की रचनात्मकता को व्यक्त करने का लोकप्रिय साधन हैं। कलाकार, लेखक, गायक और रचनात्मक व्यक्तित्व अपने कार्य को साझा कर वैश्विक पहचान बना रहे हैं। इसने नए-नए कलारियर विकल्प भी प्रदान किए हैं, जैसे कंटेंट क्रिएटर, ब्लॉगर, यूट्यूबर आदि।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और भारतीय ज्ञान प्रणाली का वर्तमान में संबंध

भारतीय ज्ञान प्रणाली और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, दोनों ही अपने-अपने युग की विशिष्ट देन हैं। एक ओर भारतीय ज्ञान प्रणाली, जो हजारों वर्षों की साधना, चिंतन और गहन अनुभव से जन्मी शाश्वत परंपरा है, वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जो आधुनिक विज्ञान और तकनीक की गति से निर्मित एक नवीनतम माध्यम है। वर्तमान समय में ये दोनों ध्रुव जैसे मिलकर एक नवीन समन्वित संसार रच रहे हैं, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

1. **ज्ञान प्रसार का साधन:** प्राचीन भारत में ज्ञान का प्रसार गुरुकुलों की पवित्र वाणी, श्रुति और स्मृति की परंपरा, तथा शास्त्रार्थ की गंभीर सभाओं के माध्यम से होता था। आज वही ज्ञान-दीपक सोशल मीडिया के आकाश में पुनः प्रज्वलित हो रहा है। यूट्यूब के व्याख्यान, फेसबुक के मंच और इंस्टाग्राम की झलकियों में भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद और गणित नई भाषा और रूप में उजागर

हो रहे हैं। जिस प्रकार ऋषि अपने यज्ञकुंड से ज्ञान की आहुति देते थे, उसी प्रकार आज का सोशल मीडिया मंच भी ज्ञान की आभा को विश्वव्यापी दिशा में प्रेषित कर रहा है।

2. **वैश्विक स्तर पर पहुँच:** भारतीय ज्ञान प्रणाली ने प्राचीन काल से ही ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’—सम्पूर्ण विश्व को परिवार मानने की अवधारणा दी। किंतु वह विचार सीमित समाजों और संस्कृतियों तक ही संप्रेषित हो पाता था। आज सोशल मीडिया ने उस विचार को मूर्त रूप दे दिया है। योग की साधना, आयुर्वेद की औषधियाँ, गीता के श्लोक और उपनिषदों की गृह शिक्षाएँ अब केवल भारत तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि सोशल मीडिया की पंखुरी पर बैठकर वे विश्व के प्रत्येक कोने में सुवासित पुष्प की तरह फैल रही हैं।
3. **युवा पीढ़ी से जुड़ाव:** शाश्वत ज्ञान की धारा कभी-कभी युवा मन के लिए गंभीर और कठिन प्रतीत होती है। किंतु सोशल मीडिया ने उस धारा को सरल भाषा और आकर्षक रूप देकर युवाओं तक पहुँचा दिया है। इंस्टाग्राम की लघु इलेक्ट्रिक्स में गीता के श्लोक जीवंत हो उठते हैं, यूट्यूब के रचनात्मक वीडियो में वेदांत की गहराई सरल व्याख्या में खुल जाती है। जिस प्रकार प्राचीन काल में कथावाचक लोकभाषा में ज्ञान सुनाकर जन-जन को जोड़ते थे, उसी प्रकार आज सोशल मीडिया आधुनिक कथावाचक बनकर युवाओं के हृदय में भारतीय ज्ञान के बीज बो रहा है।
4. **संवाद और विमर्श का माध्यम:** भारतीय परंपरा में शास्त्रार्थ केवल तर्क का खेल नहीं था, बल्कि सत्य की खोज का मार्ग था। आज वही परंपरा डिजिटल रूप में सोशल मीडिया पर पुनर्जीवित हो गई है। ट्रिविट (X) की बहसें, यूट्यूब के लाइव विमर्श और टेलीग्राम के समूह चर्चाएँ आधुनिक शास्त्रार्थ की सभाएँ हैं, जहाँ विद्वान और सामान्य जन एक ही मंच पर विचार-विनिमय कर रहे हैं। यह परंपरा दिखाती है कि ज्ञान केवल पुस्तकों में सीमित नहीं, बल्कि जीवंत संवाद में पल्लवित होता है।
5. **संरक्षण और पुनर्जीवन:** भारतीय ज्ञान प्रणाली की अनेक शाखाएँ समय के साथ धुंधली पड़ गई थीं—किसी लोकगीत की मधुरता, किसी शिल्प की निपुणता, किसी हस्तकला की परंपरा धीरे-धीरे विस्तृति में जा रही थी। किंतु सोशल मीडिया ने इन धरोहरों को नवजीवन दिया है। डॉक्यूमेंट्री, डिजिटल आर्काइव्स और वर्चुअल कक्षाओं ने उन परंपराओं को न केवल बचाया है बल्कि नई पीढ़ी के सामने गौरवपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे कोई चित्रकार पुराने धुंधले चित्र पर नए रंग भर देता है, वैसे ही सोशल मीडिया ने भारतीय ज्ञान प्रणाली की विस्मृत धरोहरों को आधुनिक आभा प्रदान की है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का वर्तमान में संबंध केवल तकनीक और परंपरा का मिलन नहीं है, बल्कि यह मानवता के अतीत, वर्तमान और भविष्य का पुल है। एक ओर भारतीय ज्ञान प्रणाली हमें गहराई, मूल्य और दिशा प्रदान करती है, तो दूसरी ओर सोशल मीडिया उसे गति, व्यापकता और आधुनिक भाषा देता है। यह संगम इस सत्य की पुष्टि करता है कि चाहे माध्यम बदले, परंतु ज्ञान का प्रकाश शाश्वत है—वह हर युग में अपना मार्ग ढूँढ़ लेता है।

डिजिटल शिक्षा ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्रांति का स्वरूप ले लिया है। पारंपरिक गुरुकुल और शैक्षिक संस्थान अब केवल भौतिक कक्षाओं तक सीमित नहीं रहे। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, वेबिनार, ई-लर्निंग कोर्स, शॉर्ट वीडियो और इंटरैक्टिव क्लासेज ने ज्ञान के आदान-प्रदान की गति और पहुँच को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया है। आज विद्यार्थी घर बैठे ही वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, गणित, विज्ञान और कला के गहन अध्ययन में संलग्न हो सकते हैं। डिजिटल शिक्षा ने ज्ञान को समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त कर दिया है। दूर-दराजे के गाँव, छोटे शहर, और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्र भी अब विश्वस्तरीय शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं। सिर्फ जानकारी का संचार ही नहीं, बल्कि डिजिटल शिक्षा ने अध्ययन को अनुभवमूलक और संवादात्मक भी बना दिया है। ऑनलाइन किंवज्ज, चर्चा मंच और समूह परियोजनाओं के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान को केवल ग्रहण नहीं करते, बल्कि उस पर चिंतन, विश्लेषण और नवाचार भी करते हैं। इस प्रकार डिजिटल शिक्षा भारतीय ज्ञान प्रणाली को सजीव और सर्वग्राह्य बनाने का अमूल्य साधन बन गई है।

लोक संस्कृति

भारत की आत्मा उसकी लोक संस्कृति में निहित है। लोककथाएँ, लोकगीत, नृत्य, शिल्पकला और पारंपरिक त्योहार के साधन नहीं, बल्कि जीवनदर्शन, सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक ज्ञान के वाहक हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म इन सांस्कृतिक धरोहरों को नवजीवन और वैश्विक पहचान प्रदान कर रहे हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से युवा पीढ़ी अब लोककथाओं और लोकगीतों से जुड़ रही है। नृत्य और शिल्पकला की प्रस्तुतियाँ वीडियो, लाइव स्ट्रीम और डिजिटल डॉक्यूमेंट्री के रूप में सुरक्षित हो रही हैं। यह न केवल हमारी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ने और उनसे सीखने का अवसर भी प्रदान करता है। लोक संस्कृति का डिजिटल रूपांतरण हमारे सांस्कृतिक संवाद और वैश्विक आदान-प्रदान को भी सशक्त बनाता है। विदेशी दर्शक भारतीय परंपरा, संगीत और कला के अद्भुत अनुभवों से परिचित हो रहे हैं। इस प्रकार सोशल मीडिया केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति का सेतु और संवाहक भी बन गया है।

ज्ञान का प्रसार

सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रसार की गति और प्रभावशीलता को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया है। योग, आयुर्वेद, वेदांत, दर्शन, विज्ञान और कला के गूढ़ तत्व अब केवल शिक्षक और छात्र तक सीमित नहीं हैं; बल्कि यह जानकारी हर व्यक्ति तक पहुँच रही है। डिजिटल माध्यमों के प्रयोग से ज्ञान सुलभ, रोचक और संवादात्मक बन गया है। शॉर्ट वीडियो, पॉडकास्ट, इन्फोग्राफिक्स, एनिमेशन और ऑनलाइन सेमिनार के माध्यम से कठिन शास्त्रीय सिद्धांत भी सहज और आकर्षक रूप में प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, वैश्विक मंच पर भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। विदेशी विद्वान, शोधकर्ता और विद्यार्थी अब योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन का अध्ययन और विमर्श कर रहे हैं। डिजिटल ज्ञान का यह वैश्वीकरण भारतीय शिक्षा और संस्कृति की प्रतिष्ठा को विश्व स्तर पर उजागर कर रहा है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का संगम नवाचार के नए अवसर पैदा करता है, जिससे ज्ञान का वैश्विकरण और युवा पीढ़ी में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ती है। यह डिजिटल माध्यम भारतीय परंपरा और आधुनिकता को जोड़कर शिक्षा और संस्कृति के प्रसार को सशक्त बनाता है-



चित्र 2. सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में नवाचार अवसर

सोशल मीडिया और भारतीय ज्ञान प्रणाली का संगम आधुनिकता और परंपरा का अद्भुत मेल है। यह वह दीप है, जो ज्ञान के अंधकार को मिटाकर समस्त विश्व को आलोकित कर रहा है। अवसर असीमित हैं—प्रश्न केवल इतना है कि हम इस साधन का उपयोग कितनी दूरदर्शी और निष्ठा के साथ करते हैं।

चुनौतियाँ

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रसार में सत्यापन, गुणवत्ता और सांस्कृतिक संतुलन की चुनौतियाँ सामने आती हैं। इसके अतिरिक्त डिजिटल असमानता और ध्यान विचलन जैसी समस्याएँ भी ज्ञान के प्रभावी वितरण में बाधक बन सकती हैं-

क. सत्यता और प्रामाणिकता का संकट: सोशल मीडिया ज्ञान का समुद्र है, परंतु इसमें मोती और कंकड़ साथ-साथ बहते हैं। प्रामाणिकता की छानबीन के बिना मिलने वाली जानकारी विद्यार्थी और शोधार्थियों को भ्रमित कर सकती है। जहाँ भारतीय शिक्षा प्रणाली शास्त्रों और ग्रन्थों की गहन समीक्षा और प्रमाण पर आधारित है, वहाँ सोशल मीडिया पर अफवाहें, आधी-अधूरी सूचनाएँ और भ्रामक तथ्य अधिक तीव्रता से फैलते हैं। यह स्थिति ज्ञान के वास्तविक स्वरूप को धूमिल कर देती है।

ख. ज्ञान का बाजारीकरण: भारतीय परंपरा में शिक्षा को "विद्या ददाति विनयम्" की दृष्टि से पूजा गया है। यह साधना का मार्ग है, वस्तु की तरह बिकने वाली सामग्री नहीं। किंतु सोशल मीडिया के वाणिज्यिक स्वरूप ने शिक्षा और ज्ञान को भी उत्पाद का रूप दे दिया

है। पेड कंटेंट, विज्ञापन और लाइक्स-शेयर की संस्कृति शिक्षा को 'निष्ठा और साधना' से हटाकर 'लाभ और प्रसिद्धि' की दिशा में मोड़ देती है।

ग. डिजिटल असमानता का संकट: भारत गाँवों और नगरों का देश है, जहाँ अब भी बहुत बड़ी आबादी इंटरनेट और आधुनिक तकनीकी संसाधनों से वंचित है। डिजिटल डिवाइड शिक्षा में गहरी खाई उत्पन्न करता है—जहाँ कुछ विद्यार्थी नवीनतम शैक्षिक सामग्री और ऑनलाइन व्याख्यान तक पहुँच रखते हैं, वहाँ कई अन्य विद्यार्थी इस सुविधा से वंचित रह जाते हैं। भारतीय ज्ञान प्रणाली का सार्वभौमिक उद्देश्य तभी सफल होगा, जब यह ज्ञान सभी तक समान रूप से पहुँचे।

घ. एकाग्रता और गहनता का विघटन: भारतीय शिक्षा प्रणाली का मूल आधार ध्यान, एकाग्रता और आत्मचिंतन है। उपनिषदों से लेकर गुरुकुल परंपरा तक, विद्यार्थियों को "श्रवण, मनन और निदिध्यासन" की त्रिवेणी से ज्ञान अर्जित करने का उपदेश दिया गया है। लेकिन सोशल मीडिया की तेज़ रफ्तार, निरंतर नोटिफिकेशन और सतही संवाद विद्यार्थी को क्षणिक संतोष की ओर खींचते हैं। गहन अध्ययन और आत्म-चिंतन की क्षमता धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है।

ड. सांस्कृतिक असंतुलन: सोशल मीडिया वैश्विक संवाद का माध्यम है, किंतु इसमें पाश्चात्य जीवनशैली और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण का वर्चस्व अधिक है। भारतीय संस्कृति की गहराई, उसकी साधना, त्याग और संतुलन की भावना कई बार इस चमकदार डिजिटल संसार में दब जाती है। यदि भारतीय ज्ञान प्रणाली को उचित मंच और प्रस्तुति न मिले तो सांस्कृतिक असंतुलन उत्पन्न हो सकता है, जहाँ विद्यार्थी अपनी जड़ों से दूर होते जाएँ।

च. भाषाई विसंगतियाँ: भारत की शक्ति उसकी विविध भाषाओं में निहित है। संस्कृत, प्राकृत, पाली से लेकर हिंदी, तमिल, बांग्ला और मराठी जैसी भाषाओं ने ज्ञान की धारा को समृद्ध किया है। किंतु सोशल मीडिया पर विदेशी भाषाओं, विशेषकर अंग्रेजी का अधिपत्य स्थानीय भाषाओं के साहित्यिक और शैक्षिक महत्व को कम कर देता है। भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञानसंपदा अनुवाद और उचित प्रस्तुति के अभाव में उपेक्षित रह सकती है।

छ. नैतिकता और आचार का ह्रास: भारतीय शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर नैतिकता, करुणा और सत्य की ज्योति प्रज्वलित करना है। परंतु सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़, ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग और आपत्तिजनक सामग्री का प्रसार इस नैतिक शिक्षा के आदर्श को चुनौती देता है। यदि विद्यार्थी इस आभासी वातावरण में अनियंत्रित रूप से विचरण करेंगे तो उनके मूल्यबोध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

ज. अति-निर्भरता और आत्मनिर्भरता का ह्रास: भारतीय शिक्षा आत्मानुशासन और आत्मनिर्भरता पर बल देती है। "स्वाध्याय" इसकी आत्मा है। किंतु सोशल मीडिया पर लगातार उपलब्ध उत्तर और आसान व्याख्याएँ विद्यार्थियों को सुविधा-प्रिय बनाती हैं। वे स्वयं प्रयास करने की बजाय तात्कालिक उत्तर खोजने की ओर झुक जाते हैं। यह प्रवृत्ति उनके भीतर के जिजासु, शोधशील और चिंतनशील व्यक्तित्व को दबा देती है।

इस प्रकार, सोशल मीडिया और भारतीय ज्ञान प्रणाली का संगम जितने अवसर प्रदान करता है, उतनी ही गंभीर चुनौतियाँ भी हमारे सामने

खड़ी करता है। इन चुनौतियों का विवेकपूर्ण समाधान ही शिक्षा के भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है।

रणनीतियाँ

भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभावी प्रचार के लिए सत्यापित सामग्री, रचनात्मक प्रस्तुति और सुविचारित डिजिटल रणनीतियाँ अपनाना आवश्यक है। इसके माध्यम से ज्ञान का सुलभ, रोचक और वैश्विक स्तर पर प्रसार सुनिश्चित किया जा सकता है-

क. सत्यापित और प्रामाणिक सामग्री का प्रसार: भारतीय ज्ञान परंपरा की सबसे बड़ी शक्ति उसकी प्रामाणिकता और गहनता है।

सोशल मीडिया पर आयुर्वेद, योग, वेदांत या दर्शन से जुड़ी सामग्री तभी विश्वसनीय बनेगी जब उसे मान्य ग्रंथों, विश्वविद्यालयों और विद्वानों के प्रमाणित स्रोतों से साझा किया जाए। "सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्" की परंपरा को ध्यान में रखकर हर जानकारी को सत्य और प्रमाण के साथ प्रस्तुत करना आवश्यक है।

ख. शैक्षिक संवाद मंचों की स्थापना: डिजिटल युग का विद्यार्थी केवल श्रोता नहीं, बल्कि सहभागी भी है। वेबिनार, लाइव सेशन, क्विज़ प्रतियोगिता, इंटरैक्टिव क्लास और ई-वर्कशॉप जैसे साधन भारतीय ज्ञान प्रणाली को केवल जानकारी नहीं, बल्कि अनुभव के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रकार शिक्षा संवादमूलक और जीवंत हो जाती है।

ग. लोक संस्कृति का डिजिटल संरक्षण: भारत की असली पहचान उसकी लोककथाओं, लोकगीतों, हस्तशिल्प और लोकनृत्यों में छिपी है। सोशल मीडिया एक विशाल डिजिटल आर्काइव का रूप ले सकता है, जहाँ इन सांस्कृतिक धरोहरों को वीडियो, ऑडियो और ई-डॉक्यूमेंट के रूप में संग्रहित किया जाए। यह संरक्षण न केवल हमारी संस्कृति को जीवित रखेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर उसे सम्मान दिलाएगा।

घ. युवा पीढ़ी हेतु आकर्षक प्रस्तुति: आज की पीढ़ी तेज़ गति और दृश्यात्मक भाषा को अधिक ग्रहण करती है। शॉर्ट वीडियो, रील्स, एनिमेशन, कॉमिक स्टोरीज और इन्फोग्राफिक्स भारतीय ज्ञान प्रणाली को सरल, रोचक और मनमोहक ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। जब आयुर्वेद का सूत्र, गीता का श्लोक या तर्कशास्त्र का सिद्धांत चित्रात्मक या दृश्यात्मक रूप में आता है तो वह स्मरणीय और सहज हो जाता है।

ड. वैश्विक नेटवर्किंग का सशक्त उपयोग: सोशल मीडिया एक ऐसा पुल है जो संस्कृतियों और देशों को जोड़ सकता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैश्विक विर्माण से जोड़ना आवश्यक है। योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तु और दर्शन पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, चर्चा और सहयोगी प्रोजेक्ट्स सोशल मीडिया के माध्यम से आयोजित किए जा सकते हैं। यह भारत की बौद्धिक विरासत को विश्व पटल पर उजागर करेगा।

च. बहुभाषिकता का संवर्धन: भारत की आत्मा उसकी भाषाओं में बसती है। यदि भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल एक या दो भाषाओं तक सीमित रही तो उसका प्रसार सीमित रह जाएगा। सोशल मीडिया पर संस्कृत श्लोकों का हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भारतीय व

विदेशी भाषाओं में अनुवाद प्रस्तुत कर बहुभाषिक संवाद स्थापित करना चाहिए। इससे ज्ञान का प्रवाह सर्वसुलभ और सर्वग्राह्य

बनेगा।

छ. नैतिक शिक्षा का पुनर्स्वरूप: भारतीय शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि मूल्य और संस्कार देना है। सोशल मीडिया के माध्यम से "नैतिक शिक्षा शृंखला" शुरू की जा सकती है, जहाँ प्रतिदिन छोटे-छोटे वीडियो, प्रेरक कथाएँ और सूक्तियाँ साझा हों। इस प्रकार आभासी जगत में भी नैतिकता की ज्योति प्रज्वलित की जा सकती है।

ज. शोध और नवाचार को प्रोत्साहन: भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल परंपरा तक सीमित नहीं, बल्कि निरंतर नवाचार की प्रेरणा देती है। सोशल मीडिया पर शोधपत्र, नए विचार, इनोवेशन प्रोजेक्ट्स और प्रयोगात्मक कार्यों को साझा करके युवाओं को अनुसंधान की ओर प्रेरित किया जा सकता है। इससे प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय संभव होगा।

झ. सहयोगी समुदाय: सोशल मीडिया केवल जानकारी देने का साधन नहीं, बल्कि एक समुदाय बनाने का भी माध्यम है। विषयवार समूह, पेज, और मंच बनाकर विद्यार्थी, शिक्षक और शोधकर्ता एक-दूसरे से संवाद कर सकते हैं। इससे सामूहिक अध्ययन और साझा अनुभवों की परंपरा विकसित होगी, जो भारतीय "सहकार" की भावना को डिजिटल युग में जीवित रखेगी।

ज. रचनात्मक डिजिटल कहानियाँ और डॉक्यूमेंटेशन: ज्ञान को केवल शुष्क सिद्धांतों में न बाँधकर कहानियों, वृत्तचित्रों और पॉडकास्ट्स के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहिए। उदाहरण के लिए, पंचतंत्र की नीति कथाएँ या उपनिषदों की प्रेरक वार्ताएँ एनिमेटेड डिजिटल कहानियों में ढाली जाएँ। इससे न केवल मनोरंजन होगा, बल्कि शिक्षा भी सहज और गहन होगी।

इस प्रकार, यदि इन रणनीतियों को योजनाबद्ध ढंग से लागू किया जाए तो सोशल मीडिया भारतीय ज्ञान प्रणाली का केवल प्रसारक ही नहीं, बल्कि संरक्षक और संवाहक भी बन सकता है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आज भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रचार-प्रसार का नवीन, सशक्त और प्रभावी साधन बन चुका है। यह केवल सूचना का वाहक नहीं, बल्कि परंपरा और आधुनिकता को जोड़ने वाला वह सेतु है, जो भारत की प्राचीन धरोहर को नई पीढ़ी तक जीवंत रूप में पहुँचाता है। इसने ज्ञान के प्रवाह को तीव्र गति दी है, युवाओं को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया है, और विश्व मंच पर भारत की आध्यात्मिक तथा बौद्धिक छवि को और भी उज्ज्वल बना दिया है। सफल प्रचार की कुंजी है—सत्यापित और प्रामाणिक सामग्री का चयन, रचनात्मक और आकर्षक प्रस्तुति, तथा सुविचारित रणनीतिक योजना। यदि इन तीनों सूत्रों का संतुलित रूप से प्रयोग किया जाए, तो भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रकाश दीपक की लौ की भाँति न केवल भारतभूमि को आलोकित करेगा, बल्कि विश्व के कोने-कोने तक अपनी ज्योति बिखेरेगा।

अय्यर, एम. (2022). सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रचार की रणनीतियाँ। ग्लोबल एजुकेशन प्रेस, बंगलोर।

कुमार, एन. (2020). भारत में ई-लर्निंग और लोकज्ञान। नॉलेज इंडिया, चेन्नई।

गुप्ता, एस. (2022). सोशल मीडिया और डिजिटल शिक्षा का प्रभाव। इंडिया एजुकेशन पब्लिकेशंस, दिल्ली।

चतुर्वेदी, वी. (2021). पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक डिजिटल मीडिया का एकीकरण। सेज पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।

जोशी, एल. (2024). डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रसार। स्कॉलर प्रेस, पुणे।

देशमुख, के. एवं रेड्डी, पी. (2020). ऑनलाइन पारंपरिक ज्ञान के प्रसार में चुनौतियाँ। एकेडमिक इनसाइट्स, हैदराबाद।

बनर्जी, टी. (2021). योग, आयुर्वेद और समकालीन भारत में डिजिटल प्रचार। हेरिटेज मीडिया, कोलकाता।

मेहता, आर. (2023). भारतीय संस्कृति और डिजिटल प्लेटफॉर्म का नवाचार। कल्वरल रिसर्च पब्लिकेशंस, मुंबई।

शर्मा, आर. (2020). डिजिटल मीडिया और भारतीय ज्ञान प्रणाली। एकेडमिक प्रेस, नई दिल्ली।

सिंह, ए. (2024). ई-लर्निंग और लोक संस्कृति का संरक्षण। हेरिटेज प्रेस, जयपुर।